❖ 300 ई०पू० - 200 ई० तक मूर्तिकला का विकास

मूर्तिकला को स्थापत्य कला से अलग करके नहीं देखा जा सकता क्योंकि स्तूप एवं चैत्य जैसी कलात्मक संरचनाओं के निर्माण के साथ-साथ मूर्ति कला का निरंतर विकास हुआ। किसी भी मूर्ति की स्थापना स्तूप, विहार या अन्य धार्मिक स्थलों पर होती थी। इस काल में मूर्तिकला के क्षेत्र में क्षेत्रीय या स्थानीय शैलीयाँ व उनके केन्द्रों का स्पष्ट रूप से विकास दिखायी पड़ता है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि मूर्तिकला के इन विभिन्न केन्द्रों ने एक-दूसरे से प्रेरणा नहीं ग्रहण की होगी। फलत: हमें पश्चिमोत्तर भारत में गांधार, ऊपरी गंगा घाटी में मथुरा जबकि दक्षिण में निचले कृष्णा गोदावरी घाटी में अमरावती जैसे कला केन्द्रों का विकास दिखायी पड़ता है। मौर्य कालीन कला का विकास शाही कला के रूप में प्रारंभ होता है —— जहाँ मौर्यकालीन कला को समग्र रूप में शाही कला कह सकते है वही मौर्योत्तर कालीन कला का सामाजिक आधार अधिक व्यापक हो जाता है। इसके साथ ही हमें तकनीकि विषयवस्तु व निर्माण कौशल में महत्वपूर्ण विकास परीलक्षित होता है। इस युग की मूर्ति कला बुद्ध की मूर्ति व रेलिंगों पर उभरी हुई, खोद कर बनायी हुयी नक्काशी, प्रवेश द्वार, स्तम्भों के आधार

मिला है।

तोरणों विहारों एवं चैत्यों की दीवार पर उभारदार नक्काशी के रूप में अपनी विकास यात्रा आरंभ करती है। इन प्रारंभिक कलाकृतियों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानों शिल्पी का हाथ काष्ठ तक्षण में दक्ष रहा हो। उस काल में ब्राह्मण धर्म की मूर्तियां कम ही बनायी गयी।

ई० पू० प्रथम शताब्दी तक हम मथुरा व गांधार जैसे कलाकेन्द्रों पर स्वतंत्र रूप से बौद्ध प्रतिमाओं के निर्माण की प्रक्रिया की शुरुआत देखते हैं। बौद्ध व जैन धर्म की देखा देखी कई देवी - देवताओं की मूर्तियों का निर्माण ईस्वी सन की पहली शताब्दी तक होने लगता है। प्रारंभ में हम रेलिंगों, स्तूपों या अन्य आधारों पर जिन चित्रों का उत्कीर्णन देखते हैं वे चित्र आकार में बड़े व सुस्पष्ट हैं यहाँ तक की

गोलआधार गोलाकार पर भी सफाई से बनाये गए हैं। उसके बावजूद कला की दृष्टि से वे सभी गणीतिय अनुपात में नहीं बने हैं। ईस्वी सन् की प्रथम् सदी तक हम इनका मानकीकरण होते देखते हैं। मूर्ति कला के विकास में हमें अपवाद रूप से दिदारगंज (पटना) से प्राप्त यक्षणी की मूर्ति है जो इन मानकों के विपरीत निष्कर्षों को इंगित करती है। यही कारण है कि कुछ विद्वान दीदारगंज से प्राप्त यक्षणी की मूर्ति को मौर्य काल